लोक प्रशासन : अर्थ एवं क्षेत्र [PUBLIC ADMINISTRATION MEANING AND SCOPE]

वर्तमान में राज्य के स्वरूप एवं दायित्वों में आये परिवर्तनों ने लोक प्रशासन की अवधारणा को अपरिहार्य सिद्ध कर दिया है। उन्नीसवीं शताब्दी तक राज्य का स्वरूप एक पुलिस-राज्य से अधिक कुछ भी नहीं था। कानून एवं व्यवस्था की स्थापना हेतु इसमें राज्य का कार्यक्षेत्र निषेधात्मक था, किन्तु शनैः-शनैः कतिपय कारण यथा औद्योगिक क्रान्ति (Industrial Revolution), वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति, जनसंख्या वृद्धि तथा आधुनिकीकरण आदि से राज्य के स्वरूप व कार्यक्षेत्र में निरन्तर परिवर्तन आता गया जिसके परिणामस्वरूप 'पुलिस राज्य' की अवधारणा का स्थान एक 'कल्याणकारी राज्य' (Welfare State) की अवधारणा ने ले लिया। बीसवीं शताब्दी की परिवर्तित परिस्थितियों में अस्तित्व में आये इस कल्याणकारी राज्य के कार्यों व दायित्वों में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई तथा निषेधात्मक कार्यों की अवधारणा का स्थान सकारात्मक कार्यों की अवधारणा ने ले लिया। पहले राज्य द्वारा केवल वही कार्य किये जाते थे, जो कि राज्य के अस्तित्व को बनाये रखने के लिये आवश्यक थे, किन्तु अब राज्य व्यक्ति एवं उसके कल्याण से सम्बन्धित समस्त कार्य करता है। व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक राज्य की यह सकारात्मक भूमिका अपने दायित्वों की पूर्ति हेतु जवाबदेह है। राज्य के इन उत्तरदायित्वों एवं कर्त्तव्यों की पूर्ति का उत्तरदायित्व पूर्णतया 'लोक प्रशासन' पर होता है। यही कारण है कि वर्तमान में लोक प्रशासन की अवधारणा अधिकाधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है।

आधुनिक संदर्भ में लोक प्रशासन की इस अहम् एवं अपरिहार्य भूमिका के कारण ही राज्य को 'प्रशासकीय राज्य' भी कहा जाने लगा है। लोक प्रशासन न केवल राज्य के कार्यों का संचालन एवं नीतियों का क्रियान्वयन करता है वरन परिवर्तनशील सरकारों वाले राज्य के ढाँचे को स्थिरता प्रदान करने का उत्तरदायित्व भी वहन करता है। वस्तुतः लोक प्रशासन का कार्यक्षेत्र जन-जीवन के सभी क्षेत्रों तक विस्तृत हो गया है। हरमन फाइनर का यह कथन उचित ही प्रतीत होता है कि "कुशल प्रशासन सरकार का एकमात्र वह आधार है जिसकी अनुपस्थिति में राज्य क्षत-विक्षत हो जायेगा।"

प्रशासन का अर्थ

(MEANING OF ADMINISTRATION)

'लोक प्रशासन' दो शब्दों 'लोक' एवं 'प्रशासन' से निर्मित है जिसमें 'लोक' विशेषण (Adjective) का कार्य करता है तथा 'प्रशासन' संज्ञा (Noun) है। लोक प्रशासन के अर्थ को समझने से पूर्व इन दोनों शब्दों का पृथक्-पृथक् अर्थ समझ लेना आवश्यक है। सर्वप्रथम संज्ञा के रूप में प्रयुक्त 'प्रशासन' शब्द का अर्थ समझ लेना अधिक उपयुक्त होगा। 'प्रशासन' शब्द मूल रूप से संस्कृत भाषा का शब्द है जो कि 'प्र' उपसर्ग 'शास' से निर्मित है तथा इसका तात्पर्य है उत्कृष्ट (Excellent) रीति से शासन संचालित करना। प्रशासन के लिये अंग्रेजी में 'एडमिनिस्ट्रेशन' (Administration) शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'एडमिनिस्ट्रेशन' शब्द व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के दो शब्दों 'एड' (Ad) तथा 'मिनिस्ट्रेट' (Ministrate) से हुई है जिसका अर्थ सेवा सम्बन्धी कार्यों को करने से है। वस्तुतः 'प्रशासन' में शासन व सेवा दोनों का ही भाव निहित है। सामान्यतया प्रशासन को विभिन्न सन्दर्भों के आधार पर निम्नलिखित चार अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है

आदि।

1. 'मंत्रिमण्डल' शब्द के पर्यायवाची के रूप में अर्थात् नेहरू-प्रशासन, इन्दिरा-प्रशासन, बुश-प्रशासन

2. सामाजिक विज्ञान की एक शाखा के रूप में। ३. सार्वजनिक नीतियों की क्रियान्विति हेतु प्रयुक्त की जाने वाली क्रियाओं के योग के रूप में।

4. प्रबन्ध की कला के रूप में। कठिन कार्य रहा है। यही कारण है कि विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रशासन की भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ प्रस्तुत की जात इन चारों अर्थों में साम्यता स्थापित न हो पाने के कारण प्रशासन की एक सर्वमान्य परिभाषा दे पाना एक कठिन कार्य रहा है।